ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

नागार्जुन के काव्य के मुख्य सरोकार

कु. किरण त्रिपाठी
शोधार्थी
दिल्ली विश्वविद्यालय

"जिस कवि को पढ़ते हुए यह न लगे कि लौट - फिरकर एक ही लम्बी कविता के अलग - अलग हिस्से पढ़ रहे हैं; जो कवि अपनी बात इस ढंग से कहता हो कि उसकी बात सीधे तल तक पहुँच जाय लेकिन अलग से यह न पता चलता हो कि उसकी बात इतनी असरदार कैसे बन गयी है; जिस कवि की उपेक्षा करते न बनता हो, उसकी रचनायें पसंद आयें या नापसंद , अपने बारे में राय बनाने को बाध्य कर देती हों; जो कवि अपनी रचनाओं में हँसता - बोलता, खीजता - चिढ़ाता हुआ बार - बार दिखाई देता हों; जो कवि दीन - दुनियां की हर बात से खबरदार हों और अपने मन में उठने वाले किसी भी विचार को बेखटके कह सकता हों; जो कवि किसी तरह की कुंठा या हिचकिचाहट से दूर हो, उस कवि के बारे में कुछ भी कहना बड़ी चुनौती का काम है."१ प्रस्तुत कथन अजय तिवारी द्वारा कवि नागार्जुन के विषय में कहा गया है और निःसंदेह यह कथन नागार्जुन और उनकी कविता के तेवर को व्यक्त करने में सक्षम हैं. हिंदी प्रगतिवादी काव्य के स्वरुप निर्धारण में जिन कवियों का विशिष्ट योगदान है, उनमें नागार्जुन का स्थान सर्वोपरि है. बाबा नागार्जुन ने अपने चातुर्दिक गरीबी, अपमान, दैन्य और विषमता में तड़पते हुए किसानों - मजदूरों को देखा था. अतः उनका काव्य उनके इर्द - गिर्द ही घूमता है. उन्होंने साधारण मास्टर से लेकर बड़े - बड़े राजनीतिक नेताओं तक तथा भूखे गरीब असहाय जनता से लेकर उद्योगपतियों तक सभी के विषय में लिखा है. उनका सम्पूर्ण काव्य विविधता से भरा हुआ है. " विषयों के चयन में भी कवि नागार्जुन की दृष्टि का वैशिष्ट्य उन्हें अपने आगे - पीछे के तमाम कवियों से अलग करता है. उनकी दुनियां बहुत व्यापक है. उसमें सागर है, ऋतुएँ हैं, जंगल और नगर - उपनगर हैं, कस्बे हैं, गांव हैं और इन सबके बीच फैला - पसरा अनंत जीवन है - मानवीय और प्राकृतिक. मानव जीवन के सब रंग हैं." २ नागार्जुन का काव्य हमेशा शोषितों के पक्ष में और शोषकों के विरुद्ध खड़ा रहा है. उनके काव्य का मुख्य स्वर विद्रोह है चाहे माध्यम कोई भी हो कभी सीधे सरल शब्दों में उनका विद्रोह व्यक्त हुआ है तो कभी व्यंग्य के माध्यम से उनके काव्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें कहीं मनुहार और पुचकार का स्वर सुनाई नहीं देता. सर्वत्र गलत के प्रति प्रतिकार और विरोध ही व्यक्त हुआ है. नागार्जुन जनकवि हैं इसलिए उनकी कविता आम जन की बात की करती है. उनका सरोकार दबी - कुचली असहाय जनता से है. वे ऐसे लोगों की जुबान बनते है जो पीड़ा और दर्द सहते रहते हैं पर कुछ कह नहीं पाते . इनकी कविता में इन परिस्थितियों के लिए उत्तरदायी व्यक्तियों, संथाओं तथा सरकारों के प्रति रोष और विद्रोह दिखाई देता है. उन्होंने अपने आस - पास इतने दुःख और पीड़ा को देखा है कि सुख और शांति की कविता नहीं लिख पाते - " कैसे लिखू शांति की कविता,/ अमन - चैन से कैसे कड़ियों में बांधू/ मैं दरिद्र हूँ, पुश्त - पुश्त की यह दरिद्रता/ कटहल के छिलके जैसी खुरदरी जीभ से / मेरा लहूं चाटती आई / मैं न अकेला / मुझ जैसे लाख - लाख हैं, कोटि - कोटि हैं.

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

नागार्जुन ने अपने समय की लगभग सभी समस्याओं को अपने काव्य का विषय बनाया है. इनके काव्य में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, राष्ट्रीय जीवन की उथल - पुथल, विचारधाराओं के संघर्ष, मजदूर वर्ग का शोषण, भारतीय राजनीति का निरंतर भ्रष्ट और लोकविमुख होता जाता चरित्र, दिन - दिन अपनी विश्वसनीयता खोता बुद्धजीवी वर्ग,लोकतंत्र के नाम पर समर्थ राजनीति दलों की तानाशाही और इन सभी की विद्रूपताओं के विरूद्ध हिंसा का भाव सभी कुछ स्पष्ट रूप में दिखाई देता है. नागार्जुन की कविता का मूल सरोकार जनता से है. वे लोकजीवन को अपनी कविता का विषय बनाते हैं."उनकी कविता का संसार वह लोकजीवन ही है जिसे अति सामान्य समझकर अन्य कवि ऑखें मूँद लेते हैं." 3 अर्थात उन्होंने उन सभी विषयों पर अपनी लेखनी चलायी जिसे अन्य कवि उपेक्षा के भाव से देखते या ज्यादा महत्व नहीं देते और इस कारण महत्वपूर्ण होते हुए भी वह साहित्य का विषय नहीं बन पाती. "नागार्जुन की कविता की दुनियां में विभिन्न सामाजिक वर्गों, समुदायों और जातियों से लेकर जीव - जंतुओं तक के लिए जगह है..... नागार्जुन के काव्य - संसार में भारतीय समाज के उन जन- समुदायों के लिए भी जगह है जिन पर दूसरे कवियों ने ध्यान ही नहीं दिया है"4.

मूलतः मार्क्सवादी चेतना से प्रभावित होते हुए भी नागार्जुन में उसका कठमुल्लापन दिखाई नहीं देता. इनकी विशिष्टता यह है कि इन्हे जब जैसा अनुभव हुआ तब वैसा लिखा कभी भी इन्होंने किसी विचारधारा को जनता की समस्या के ऊपर नहीं रखा. राजनीतिक मतभेदों के बावजूद उन्होंने शोषितों, वंचितों, पीड़ितों, सर्वहारा और किसानों जैसे सामान्य जन की पक्षधरता का पल्ला कभी नहीं छोड़ा. उनके लिए किसी विचारधारा से ज्यादा महत्वपूर्ण जनता कि जरूरतें होती हैं. नागार्जुन प्रतिबद्ध मार्क्सवादी हैं किन्तु उन्होंने जहाँ कहीं भी जनहित और विचारधारा के बीच टकराव महसूस किया है, वहां वे विचारधारा के विरूद्ध और जनता के पक्ष में खुलकर खड़े हुए हैं -

"क्या है दक्षिण क्या है वाम

जनता को रोटी से काम." 5

इनके काव्य में धार्मिक पाखंड का भी विरोध दिखाई देता है. ये उस धर्म के विरोधी हैं जो जनता के साथ दुर्व्यवहार की इजाजत देता हो. उनके यहाँ धार्मिक पाखंड का विरोध किया गया है. वे पहले हिन्दू (ब्राह्मण) थे और बाद में बौद्धधर्म ग्रहण कर लिया परन्तु उनमें किसी भी धर्म के प्रति अंध श्रद्धा का भाव नहीं है. उन्होंने 'चौराहे के उस नुक्कड़ पर' कविता में अंध श्रद्धालुओं तथा उनकी श्रद्धा का दुरुपयोग करने वाले साधुओं पर भी प्रहार किया है क्योंकि वे इस अँधा श्रद्धा के बल पर ही भोली - भली जनता को लूटते हैं -

" काँटों पर नंगा सोया है

ठिठक गया मैं लगा देखने

उस औघड़ बाबा के करतब

X x x

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

जय हे भिक्षुक जय हे दाता

पियो संत हुगली का पानी

पैसा सच है दुनियां फानी " 6

उन्होंने हिन्दुओं में श्रेष्ठ माने जाने वाले भगवान् विष्णु के क्षीर सागर को पी जाना चाहते है ताकि उसमे मुर्दा भगवान दिखाई दे. इसी प्रकार वे बौद्ध धर्म की कठिनाइयों को भी समझते हैं. बौद्ध धर्म मोह - माया के त्याग की बात करता है जहाँ किसी भिक्षुक या भिक्षुणी को अपनी मानव सुलभ भावनाओं को भी छोड़ना पड़ता है. नागार्जुन ने बौद्ध धर्म की इस जकड़बंदी के खिलाफ भी लिखा है . उन्होंने एक बौद्ध भिक्षुणी के मातृत्व - भावना को भी स्वर दिया जो बचपन में भिक्षुणी बन गयी, परन्तु युवावस्था में उसमें नारी शुलभ भावनाएं जागृत होती हैं और वह मातृत्व सुख पाना चाहती है -

“ भगवान अमिताभ, सहचर मैं चाहती

चाहती अवलम्ब, चाहती सहारा

देकर तिलांजलि मिथ्या संकोच को

हृदय की बात लो, कहती हूँ आज मैं -

कोई एक होता

कि जिसको

अपना मैं समझती.....

भूख मातृत्व की मेरी मिटा देता;

स्त्रीत्व का शुलभ पाकर अनायास

धन्य मैं होती !” 7

नागार्जुन हमेशा से जनता के शाशन के हिमायती रहे हैं. उन्होंने भी तुलसी के रामराज की तरह एक ऐसे समाज की कल्पना की है जहाँ सभी एक बराबर होंगे कोई अमीर - गरीब, शोषक - शोषित, मजदूर उद्योगपति में विभाजित नहीं होगा. उन्होंने जन - सामान्य के प्रति हमदर्दी व्यक्त करते हुए एक ऐसे समाज का स्वप्न सामने रखा हैं जिसमे सरकारों को सेठों और जमींदारों के प्रति मोह न होकर गरीब श्रमिक जनता किसानों से प्रेम होगा -

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

" सेठों और ज़मींदारों को नहीं मिलेगा एक छदाम

खेत- खान - दूकान - मिलें सरकार करेगी दखल तमाम

खेत मजूरों और किसानों में जमीन बँट जाएगी

नहीं किसी कमकर के सर पर बेगारी मंडराएगी "8

नागार्जुन ने वैसे तो सभी विषयों पर अपनी लेखनी चलायी है, परन्तु उनके साहित्य का बहुतायत हमें राजनीतिक विद्रूपताओं के विरूद्ध ही देखने को मिलता है. राजनीति में अपनी जड़े जमा चुके भ्रष्टाचार, अवसरवाद, भाई - भतीजावाद सभी के विरूद्ध जनांदोलन में हमेशा सरीख रहे और अपनी कविताओं के माध्यम से भी वे आंदोलन को बढ़ावा देते रहे. विजय बहादुर सिंह लिखते हैं - " वे हमारी स्वार्थ लिप्सा, अवसरवाद, जातिवाद, वर्णवाद, सामाजिक कठमुल्लापन, धार्मिक पाखंडवाद घिनौनी राजनीतिक बदमाशियों, दोगलापन, बौद्धिक अय्याशी , हमारी जूतचटनी आदतें संघर्ष , विरोधी जीवनशैली, लोकविमुख कलाकारी, इतिहास विरोधी दृष्टि पर निरंतर प्रहार करते हैं."9 लोकतंत्र के नाम पर हो रही हिंसा पर उन्होंने बड़ी निडरता और बिबेकी से कहा है - प्रतिहिंसा ही स्थायी भाव है मेरे कवि का/जन मन जो ऊर्जा भर दे, मैं उद्गाता हूँ उस रवि का.10 भारतीय संविधान यह घोषणा करता है कि भारत के शासक भारत के लोग है लेकिन यह बात व्यवहार में सत्य नहीं है. आम जनता केवल मतदान देने तक ही शासन में भागीदार बनती है उसके बाद तो आम जनता द्वारा चुनकर संसद में पहुंचे लोग आम जन की भलाई का न सोचकर पूंजीपतियों के साथ मिलकर देश के अमूल्य संसाधनों का दोहन करता है -

"खादी ने मलमल से अपनी सांठ-गांठ कर डाली है

बिड़ला और डालमिया की तीसों दिन दिवाली है" 11

इनकी कविताओं में हमे बेहद सामान्य लगने वाली समस्याएं जो जनता को सीधे रूप से प्रभावित करती हैं, के प्रति चिंता का भाव मिलता है. ऐसी ही एक समस्या है महंगाई. इससे आम जनता त्रस्त है इस पर नागार्जुन इसके जिम्मेदार लोगों से कहते है - मंहगाई की सूपनखा को कैसे पाल रही हो / सत्ता का गोबर जनता के मत्थे डाल

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

रही हो...../ पग - पग पर तुम लगा रही परिवर्तन के नारे/ जन - युग की सतरंगी छलना, तुम जीती हम हारे. 12 इन्होंने अंग्रजी शासन की ज्यादतियों को देखा था और आज़ादी के बाद भारतीय शासकों को भी वैसे ही करते देख रहे थे. उनका आक्रोश इन शब्दों में व्यक्त हुआ है -

राम राज में अबकी रावण नंगा होकर नाचा है.

सूरत शक्ल वही है भैया बदला केवल ढांचा है .13

नागार्जुन बुद्धजीवी वर्ग से भी घृणा करते हैं क्योंकि वह शासक के साथ मिलकर जनता के शोषण में सहयोग देता है. उनका मानना है कि सभी बुद्धजीवी बिके हुए हैं जिधर उन्हें पैसा मिलता है वे उधर ही खड़े होते हैं. उनके अनुसार बुद्धजीवी जनता से कोई सरोकार नहीं रखते उन पर जातिवाद हावी है. नागार्जुन ने स्वयं कहा है - "अपने यहाँ रजनीश बहुत बिकते हैं पर उनकी बौद्धिकता जनाभिमुख नहीं है ....अपने यहाँ का जो बुद्धजीवी वर्ग है वह जातिवादी कुसंस्कारों से लदा हुआ है." 14

"हे विभ्रांत बुद्धजीवी, तुम बने हुए हो भार भ्रम भगवान

शासक शोषक वर्ग तुम्हारा क्यों न करे गुणगान" 15

नागार्जुन जनकवि हैं जैसा कि उन्होंने स्वीकार किया है 'जनता मुझसे पूछ रही है क्या बतलाऊँ?जनकवि हूँ साफ कहूंगा क्यों हकलाऊँ? उन्होंने अपने काव्य में जिस भी विषय का वर्णन किया है उनका सरोकार जनता से ही रहा है. उनकी जनभावना किसी भौगोलिक सीमा की मोहताज नहीं है. वे संपूर्ण जनता के हित की बात सोचते हैं. "दुनियां में जहाँ भी दमन और संघर्ष है नागार्जुन की सहृदयता भौगोलिक सीमाएं तोड़कर जनता की तरफ़दार बनती यही." 16 "उन्होंने बड़ी संख्या में मेहनतकश लोगों की तबाह जिंदगी और उनके राजनीतिक संघर्षों पर कविताएं लिखी हैं, जहाँ कहीं जनता, चाहे वह एक छोटा सा समूह ही क्यों न हो, शोषण का प्रतिकार करती है और अपनी मुक्ति के लिए संघर्ष करती है, वे पूरे दिल से उसे समर्थन देते हैं. चाहे वह सन'४८ का तेलंगाना विद्रोह हो या नेपाली जनता का संघर्ष. चाहे वह भारत के मेहनकशों का कोई आंदोलन हो, या वियतामी जनता का मुक्ति संघर्ष ; नागार्जुन ने हमेशा संघर्षरत लोगों का साथ दिया."17

अफ्रीका की काली मिटटी लाल हो गई आज

गोरे बौनों की साज़िस विकराल हो गयी आज

मैं सुनता हूँ कीलों वाली बूटों की ठनकार

मैं सुनता हूँ जंग लगी हथकड़ियों की झनकार

मैं सुनता हूँ राष्ट्रसंघ की छलनामय चुमकार

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

मैं सुनता हूँ बंधु तुम्हारा प्रतिरोधी हुंकार.....18

नागार्जुन केवल क्रांतिकारी चेतना से ही संपन्न नहीं थे, उनमें कोमल भावनाएं भी थी जो उनकी प्रकृति विषयक कविताओं में स्पष्ट हुई हैं. उन्होंने प्रकृति को नजदीक से देखा है और उसके सुन्दर असुंदर सभी रूपों को अपने काव्य में स्थान दिया है. वे प्रकृति को एक ग्रामीण या किसान की निगाह से देखते हैं. उन्हें प्रकृति के उस रूप में रूचि है जो उनके दैनंदिन जीवन का हिस्सा बन गए हैं. जैसे कौवा, चूहा, छिपकली, इत्यादि. उन्होंने 'पैने दांतों वाली' कविता में सूअर को विषय बनाया है. इसी तरह अपने जेल प्रवास के दौरान उन्होंने एक नेवला पाला था जो इनके एकाकी जीवन में उनका सहचर बना. उसका वर्णन इन्होंने इतने वात्सल्य से किया है कि यदि इस कविता में 'नेवला' शब्द न आता तो शायद ही किसी को पता चलता कि नागार्जुन ने किसके बारे में ये कविता लिखी है. नागार्जुन की कोमल भावनाएं उनकी प्रकृति सम्बन्धी कवियों में दिखाई देती हैं, जहाँ वे अत्यंत प्रसन्न दिखायी पड़ते हैं. प्रकृति चाहे ग्राणीण हो चाहे नागरिक नागार्जुन को प्रेरित करती है. कल्पना का वैभव भी इन कविताओं में अत्यंत उत्कृष्ट रूप में प्रस्तुत हुआ है. यहाँ कवि का राजनीतिक स्वर पीछे रह जाता है और एक सहज, भोले, अविकृत संवेदना वाले कवि का रूप दिखाई पड़ता है . वसंत की अगवानी कविता में कवि ने लिखा है - "वृद्ध वनस्पतियों की ठूठी शाखाओं में / पोर - पोर टहनी - टहनी का लगा दहकने/ टूसे निकले, मुकुलों के गुच्छे गदराए/अलसी के नील फूलों पर नभ मुस्काया"19 'बादल को घिरते देखा है ' में हिमालय पर्वत के सौंदर्य का चित्रण है. यह चित्रण एक सैलानी के भाव से हुआ है -

अमल धवल के शिखरों पर

बादल को घिरते देखा है

छोटे - छोटे मोती जैसे

उसके शीतल तुहिन कणों को

मानसरोवर के उन स्वर्णिम

कमलों पर गिरते देखा है

बादल को घिरते देखा है .20

नागार्जुन के प्रकृति विषयक कविताओं के विषय में डॉ. नामवर सिंह ने लिखा है - "
नागार्जुन के काव्य - संसार का एक बहुत बड़ा भाग अनूठे प्रकृति चित्रों से सजा है, जिनसे कवि की ग हरी ऐंद्रियता और सूक्ष्म सौंदर्य दृष्टि का अहसास होता है." 21 मानव जीवन और स्वभाव के साथ प्रकृति को जोड़कर

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

देखने की अपनी संवेदना को प्राकृतिक उपादानों से भी व्यक्त कर देने की तथा जिन्हें प्रकृति या ऋतुओं का ज्ञान न हो, उनके लिए भी अपनी कविता को ग्राह्य बना देने की कला नागार्जुन के में अद्वितीय है - "पवन ने बहका लिया था /मेघ कुल की पुत्रियां हैं !/बदलियां हैं !/ .....ओफ ! इनसे क्यों डरे हो ? / - कहाँ इनमे बिजलियाँ हैं !22

इन्होंने नारी को भी सम्मान के भाव से देखा है. इनके काव्य में स्त्री को छायावादी रोमानियत से नहीं वरन यथार्थ के वास्तविक रूप में देखा गया है. वह घर - गृहस्थी को सम्हालती एक स्त्री के रूप में चित्रित है. कवि को अपनी कठिनाई भरे दिनों में अपनी पत्नी का 'सिन्दूर तिलकित भाल याद आता है. उन्होंने 'गुलाबी चूड़ियां' में एक पिता के अपनी पुत्री के प्रति प्रेम व वात्सल्य को भी निरूपित किया है. उन्होंने राम के द्वारा अहिल्या को दिए वचन का जैसा चित्रण किया है वह उनकी दृष्टि में स्त्री के सम्मान के भाव को व्यक्त करता है -

"जीवन भर वह तुम्हें रखेगा याद

नारी के प्रति कभी न होगा क्रूर

नहीं करेगा वह दूसरा विवाह

सदा रहेगा एक पत्नीव्रत शील....

कभी न मेरे अन्तःपुर के मध्य

होगा षोडषियों का जमघट व्यर्थ

नहीं करूँगा सपने में भी, अब

क्रयकरीत दासी का भी अपमान...."23

जिस प्रकार उनकी कविता का विषय जान सामान्य है उसी प्रकार उनकी भाषा भी सार्वजनग्राह्य है. उनकी भाषा भावनुगामी और सीधी सरल है .उसमें ग्रामीण जीवन के साथ - साथ ग्रामीण भाषा और उसके शब्द भी पर्याप्त मात्रा मिल जाते हैं.अधिकांश उनके शब्दों का मिजाज और स्वरुप सरल है.उनकी कुछ कविताओं में तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है. लेकिन यह कुछ गिनी चुनी कविताओं में ही देखने को मिलता है. इसी सन्दर्भ में उनकी व्यंग्य विदग्धता भी देखने योग्य है जिसके माध्यम से वे कठिन- से - कठिन बात बड़ी सरलता से कह जाते हैं. व्यंग्य नागार्जुन की कविता का प्राण है. " व्यंग्य की विदग्धता ने ही नागार्जुन की अनेक तात्कालिक कविताओं को कालजयी बना दिया है.....यह निर्विवाद है कि कबीर के बाद हिंदी कविता में नागार्जुन से बड़ा व्यंग्यकार अभी तक कोई नहीं हुआ."24 उनकी कविता में वही हंसी, जिंदादिली और व्यंग्य है जो सामंती उत्पीड़न और आम जनता की भूख और बेगारी को देखकर उपजे हैं. इनमें आज के आदमी कि दम तोड़ती जिंदगी, उसकी तकलीफों और संघर्षों को पूरी संवेदना के साथ चित्रित किया गया है -

देश हमारा भूखा नंगा घायल है बेकरी से.

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

मिले न रोटी रोजी भटके दर-दर बने भिखारी से .25

उनके काव्य का सरोकार किससे है यह जानने के लिए अरुण कमल का कथन ही काफी है - "नागार्जुन ने स्वयं को जन सामान्य के साथ एकाकार कर लिया..... नागार्जुन की कविताओं को पढ़ते हुए हमेशा ध्यान रखना चाहिए की वे हिंदी के उन कवियों में हैं, जिनके सामने कभी यह दुविधा पैदा नहीं हुई कि कविता किसके लिए या कविता की उपयोगिता क्या है?" 26 वस्तुतः हम देखते है की नागार्जुन के काव्य में वर्णित सभी विषय उनके समाज से है. उनकी कविताओं में खुले तौर पर घोषणा की गयी है की वे जनकवि हैं अर्थात उनका सरोकार और प्रतिबद्धता आम जनता से है. उन्होंने समय की परिस्थितियों को जाना, समझा, परखा और उन्हें अपने काव्य में स्थान दिया . उनमें आत्मविश्वाश भरा हुआ है जिससे वे अपने समय की बड़ी ताकतों से भी नह डरे. नागार्जुन के काव्य में हमेशा साधारण जन ही केंद्रीय चरित्र रहा है, जिसमें ट्रक का प्राइवेट ड्राइवर, रिक्शाचालक, हरिजन बालक, गरीब मास्टर, अकाल से पीड़ित जनता आदि शामिल हैं.

सन्दर्भ – सूची

1. नागार्जुन की कविता, अजय तिवारी, भूमिका
2. निर्मला जैन, नागार्जुन और समकालीन विमर्श, सं. डॉ. रमा , पृ. ३०
3. कविता की जमीन और जमीन की कविता, डॉ. नामवर सिंह, पृ. १७५
4. नागार्जुन और समकालीन विमर्श, नागार्जुन और समकालीन विमर्श, सं. डॉ. रमा, पृ. १९ - २०
5. नागार्जुन, युगधारा, पृ. ९३
6. नागार्जुन, प्यासी पथराई ऑखें,पृ. ३२
7. नागार्जुन, युगधारा, पृ. १९
8. हंस, अप्रैल १९४८, अंक ७ (लाल भवानी)
9. नागार्जुन संवाद, विजय बहादुर सिंह, पृ. १६
10. नागार्जुन, खिचड़ी विप्लव पृ. 11
11. हंस, मई १९४९, अंक ८, पृ. ४९२
12. नागार्जुन, तुमने कहा था, पृ. ४८-४९
13. हंस, जून १९४८ (रामराज कविता), पृ. ४८३

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

14. नागार्जुन संवाद, विजय बहादुर सिंह, पृ. २५

15. नागार्जुन, हजार - हजार बाँहों वाली, पृ. १९

16. नागार्जुन की कविता, अजय तिवारी, पृ. ५५

17. प्रो. अरुण कमल, नागार्जुन और समकालीन विमर्श, सं. डॉ. रमा, पृ. ४०

18. नागार्जुन, प्यासी पथराई ऑंखें, पृ. १५

19. नागार्जुन, सरंगें पंखों वाली, पृ. ३१

20. नागार्जुन, युगधारा, पृ. ७५

21. कविता की जमीन और जमीन की कविता, डॉ.नामवर सिंह, पृ. १७६

22. नागार्जुन, हजार - हजार बाँहों वाली, पृ. १७६

23. नागार्जुन, युगधारा,पृ. ४२

24. कविता की जमीन और जमीन की कविता, डॉ.नामवर सिंह, पृ. १७७

25. जनयुग, ४ जनवरी, १९६८

26. प्रो. अरुण कमल, नागार्जुन और समकालीन विमर्श, सं. डॉ. रमा, पृ. ३८

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)